P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

डॉ० श्याम सिंह शशि और यायावर साहित्य

शक्ति शर्मा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
एच. एन. बी. गढवाल
विश्वविद्यालय,
उतराखण्ड

सारांश

यायावरी कविता के जन्मदाता, प्रकृति व प्रवृति से यायावर डॉ० श्याम सिंह शशि ने साहित्य जगत में अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाई हैं। सुशिक्षित, सौम्य, शिष्ट सर्वतोमुखी प्रतिभा सम्पन्न, मेधावी, समाजासेवी, यायावरों को एक विशिष्ट पहचान दिलाने वाले डॉ० श्याम सिंह शशि यायावर साहित्य जगत के सुपरिचित हस्ताक्षर हैं। यायावरों की संवेदनाओं, तकलीफों का जितना सजीव चित्रण डॉ० श्याम सिंह शशि ने किया है शायद ही किसी ने किया हो। वे एक प्रगतिशील कवि है उनके काव्य रचनाओं में निहीत पीड़ा व्यष्टि न होकर समष्टि है। उनकी रचनाओं में काव्य एवं शिल्प दोनों ही दृष्टियों में एक नई दिशा देने का प्रयास किया गया है। डॉ० शशि की कविता सामाजिक व व्यक्ति मन के बीच का एक अनवरत द्वन्द्व है जीवन रूपी यथार्थ रणक्षेत्र में जिसकी झटपटाहट देखी जा सकती हैं। डॉ० शशि का काव्य अलौकिता और दिव्यता से परिपूर्ण है जिसमें सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की भावना विद्यमान है। प्रकृति को अपने काव्य में उन्होंने चितेरे चित्रकार की तरह चित्रित किया है। अपनी रचनाओं में माध्यम से डॉ० शशि पाठक को देश–विदेश की यात्रा करवा देते हैं। अपनी पुस्तकों में पहाड़ों की कंदराओं में व्यतीत करते यायावरों के जीवन पर प्रकाश ड़ाला है। इन गरीब यायावरों की दिनचर्या अत्याधिक कठिन होती है। कड़ाके की ठंड में सीसियाते, ठिठुरते अर्द्ध–नग्न बालकों को जिन्हें दूध की आवश्यकता होती है। नमक के कड़वे पानी को हलक में उतारना पड़ता है। ये यायावर लोग जंगल से जंगल खानाबदोश जीवन को जीते हैं। इन्हें पॉच भागों में बांटा गया है। पशुपालक जातियॉ, पेशेवर, अपराधी यायावर व्यापारिक यायावर, भिक्षुक यायावर। भारत में इन आदिवासियों की संख्या लगभग तीन करोड़ से भी अधिक है। नदियॉ, जंगल, पहाड़ इनके जीवन यापन का मुख्य स्त्रोत रहा है। अनवरत संघर्ष इन जनजातियों की प्रकृति रही हैं इन लोगों ने दर्द में जीना सीख लिया है। पहाड़ों में पशुपालन कर ये लोग अपना जीवन यापन करते हैं। इनमें कुछ जातियॉ सॉप तक खा जाती है। प्रकृति ने इन्हें अपना शरणार्थी बना लिया है। जहॉ–जहॉ ये लोग जाते हैं। इनका सम्पूर्ण परिवार इनके साथ चलता हैं। सूतकातना, टोकरी बनाना, वस्त्र बुनना, चटाई, बर्तन तथा अन्य कई घरेलू उपयोग का सामान भी इनके द्वारा बनाकर बेचा जाता है। किन्तु उसे बिडम्बना की कहा जा सकता है कि तथा कथित सभ्य समाज इनका शोषण करता हैं उन्हें उनकी चीजों का उचित मूल्य नहीं देता। आज भी पीढ़ी दर पीढ़ी साहुकारों द्वारा इनका उत्पीडन किया जाता है। यहॉ तक कि इनके अजन्में बच्चें भी इस कर्ज के भार के तले दबे रहते हैं। इनमें कुछ जातियॉ बहु पत्नी विवाह प्रथा में विश्वास करती है। यह भी देखने में आया है कि कुछ यायावर जाति गद्दी पति की मृत्यु के उपरान्त पत्नी किसी दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध स्थापित कर सकती है। उसे बुरा भी नही माना जाता है। यदि इस सम्बन्ध से किसी शिशु का जन्म हो जाता है तो पहले पति का नाम ही उसे दिया जाता है। वह नाजायज नहीं माना जाता है। किन्नर यायावर जाति के लोग जिस घर में अधिक पुरुष होते है उसे अच्छा मानते है। सब भाई एक ही पत्नी के साथ एक ही घर में रह जाते हैं। यही इनका कुटुम्ब होता है। इनकी धारणा है कि अलग–अलग शादी करने से घर में विखराव आ जाता है ये लोग अपने आप को पांडवों का वंशज मानते हैं। बहु पति प्रथा के साथ–साथ कहीं–कहीं यायावर समुदाय में बहु–पत्नी की प्रथा भी देखने को मिलती है।

मुख्य शब्द : डॉ० श्याम सिंह शशि, यायावर सहित्य।

प्रस्तावना

साहित्य किसी भी राष्ट्र के मन–मस्तिष्क में उठने वाले अथवा समवात विचारों के निग्रंथन का ही एक नाम है। साहित्य मनुष्य–जीवन को अनेक

बिन्दुओं पर स्पर्श करता है और मानव–अस्तित्व से सम्बन्धित प्रश्नों तथा विविध रूपों में प्रभाव डालता है। यहीं पर साहित्य के मूल्य का प्रश्न उठता है। वस्तुतः साहित्य एक दर्पण है, जिसमें हम अपनी ही चेतनाओं और सपनों को देखते हैं। प्रत्येक साहित्य चाहे वह बाल साहित्य हो, यायावरी साहित्य हो, गद्य–साहित्य हो या अंग्रेजी साहित्य हो या अन्य कोई भी। प्रत्येक साहित्य अपने आप में परिपूर्ण होता है एवं एक उद्देश्य लिए रहता है। वह तत्कालीन समाज व परिवेश का एक जीवन्त चित्रण होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

उल्लेखनीय है कि यात्रा तथा यायावर साहित्य को हिन्दी शोध जगत में एक जैसा मान लिया जाता है जब कि ऐसा नहीं है। कुछ सीमा तक दोनों विधाएँ एक साथ चलती तो हैं। किन्तु यायावर साहित्य विधा नृतत्वशास्त्र से जुड़कर साहित्य को नई उष्मा आप्लावित करती है। उससे शोध उभय पक्षीय दिशा लेता है और तब वह यायावर जनजातीय साहित्य के रूप में उभरता है। एक नया पक्ष तलाशता है जिसमें भ्रमण, यात्रा, पर्यटन आदि के साथ–साथ सामाजिक सर्वेक्षण भी सन्निहित होता है। हिन्दी में सम्भवतः डॉ. शशि ही अकेले वरिष्ट साहित्यकार हैं जो इस विषय पर अनवरत् लिखते रहे हैं।

डॉ० श्याम सिंह शशि द्वारा विरचित, कहानियों, उपन्यासों, नाटकों तथा काव्य ग्रन्थों में हम जो कुछ पढ़ते हैं, उनमें कहीं न कहीं दलितों, शोषितों, यायावरों के प्रति वेदना स्पष्ट रूप से झलकती है। प्रत्येक अवस्था में एक यायावरी व्यक्ति कुछ न कुछ संदेश देता है। पाठक इस व्यक्तित्व का स्वर सुनता है, वह इसी व्यक्ति के साथ कल्पनाओं, विचारों और भावनाओं के संसार में घूमता है, सच्ची आत्माभिव्यक्ति आत्मशुद्धि से निकलकर आत्मा की परिपूर्णता की ओर बढ़ती है। साहित्य को जीवन और समाज का दर्पण कहते हैं। यह नितांत सत्य है। मनुष्य की इकाइयों का समूह ही समाज है, जिसके निर्माण के मूल में मानव–मन और मस्तिष्क की विचार धाराएँ पाई जाती हैं। ईमानदारी,कर्मनिष्ठा, कर्त्तव्यपरागणता सामाजिक चित्रण की प्राण शक्ति है, चाहे उसे आदर्शवाद कहें या यथार्थवाद, डॉ० श्याम सिंह शशि का साहित्य अंग्रेजी हो या हिन्दी या फिर यायावरी अपने आप में परिपूर्ण हैं। उनकी साहित्य यात्राओं में चाहे वह जर्मन हो या यू०एस०ए० में भारत की मिट्टी बोलती है, उसका आकाश बोलता है, उसकी हवाएँ डोलती है, उसकी आग की पावनता तेज की किरणें विकीर्ण करती हैं। साहित्य समाज का दर्पण है, जिसमें युग की समस्त विचार धाराओं, सिद्धान्तों तथा भावनाओं के उत्थान व पतन का चित्र देखा जा सकता है। साहित्य जीवन की अभिव्यक्ति है। डॉ० श्याम सिंह शशि की रचनाएँ यथार्थ से परिपूर्ण हैं, उनकी रचनाएँ यथार्थ को ऐतिहासिक विवेक से जोड़कर समकालीन मानवीय स्थिति के अहसास को प्रासंगिक और गहरा बनाती हैं। वे अपने समय का साक्ष्य होने के साथ अपने समय में हिस्सा लेती हैं, जूझती, उलझती और इस तरह अपने अनुभव को एक सर्जनात्मक सार्थकता तक ले जाती हैं। यायावरी एक अजीब नशा है। एक अनवरत् खोज है। यायावर होने के लिए व्यक्ति की परिस्थिति उसे मजबूर नहीं करती अपितु उसकी विचरण करने की प्रवृत्ति उसे यायावर बना देती है। यायावरों पर प्रकाश डालते हुए सुप्रसिद्ध नृवैज्ञानिक, यायावर लेखक, डॉ० श्याम सिंह शशि लिखते हैं :–'' एक यायावर माँ को अपने नवजात शिशु को कन्धे पर लटकाए पहाड़ की खड़ी चढ़ाई पर चढ़ते जब पहलीबार हिमालय में देखा था तो ठहर गया था मेरा अध्ययन कुछ क्षणों के लिए ...''[1] यात्रा साहित्य एवं यायावर साहित्य का मूल उत्स एक होने के बावजूद दोनों के मध्य एक सूक्ष्म अन्तर है। जिसे गहन अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के उपरान्त ही समझा जा सकता है। लेखक जब भ्रमण यात्राओं के दौरान 'आंखिन देखी' को कागज की लेखी बनाता है तो वह यात्रा साहित्य कहलाता है जबकि इसके विपरीत यायावर जातियों के बीच रहकर उनकी जीवन शैली, भाषा बोली, खान–पान, रहन–सहन, रीति–रिवाज, संस्कृति के बीच जीवन व्यतीत कर उसका परिचय समाज को करवाता है, वह यायावर साहित्यकार कहलाता है। यायावरों के विषय में डॉ० श्याम सिंह शशि अपने अनुभव को लिखते हैं :– '' यायावरी, साहित्य को सृजन की मनोभूमि तो दे सकती है किन्तु समाज वैज्ञानिक को चुनौती तथा चिन्तन के अतिरिक्त शायद ही कुछ दे।''[2] यायावरों के इतने सजीव चित्रण को यायावरों के बीच रह कर ही किया जा सकता है। यायावर साहित्य के सैद्धांतिक पक्ष को स्थापित करने का श्रेय प० राहुल सांकृत्यायन को जाता है। दूसरी तरफ इसके अग्रदूत यदि पद्मश्री से सम्मानित, लेखक, चिंतक डॉ० श्याम सिंह शशि को कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगा। अंग्रेजी का (NOMAD) शब्द को हिन्दी में 'यायावर' 'खानाबदोश' या 'धुमन्तू' नामों (संज्ञाओं) से सम्बोधित किया जाता है। ये यायावर पूर्ण कालिक भी होते हैं एवं अंशकालिक भी। इनमें से कुछ लोग छः महीने प्रवास में रहकर घर लौट आते हैं और कुछ अपना घर बनाते ही नहीं हैं। ये सदैव चलायमान रहते हैं। डॉ० श्याम सिंह शशि यायावरों का विवरण लिखते हैं–''कार्य तथा समय की दृष्टि से यायावर दो प्रकार के होते हैं पूर्णकालिक तथा अद्र्धकालिक। डॉ० श्याम सिंह शशि ने यात्राओं तथा शास्त्रीय अध्ययन के आधार पर यायावरों को निम्न श्रेणियों में रखा है :–

पशुपालक जातियाँ

आभीर, अहीर यादव, गद्दी, ग्वाला, धोसी, घोष, गोपाल, गोपी, गवारी, गुज्जर, इडियान, कुरुबा, राजगोंड, धनगर, भाखाड़, खारी, पाल, गड़रिया, टोडा आदि।

कलाकार पेशेवर

लोक गायक, लोक नर्तक, भाट–चारण, नट, बाजीगर, कठपुतली वाले, भालू नचाने वाले, संपेरे, मदारी आदि।

पेशेवर यायावर

सिकलीगर, फेरी वाले

व्यापारिक यायावर

लंबाडी, लमाणा, बंजारा, भोटिया आदि।

पूर्व अपराधी यायावर

सांसी, कंजर, बावरिया, डोम, सल्लीमार आदि।

भिक्षुक यायावर

जोगी, रामास्वामी, रंगास्वामी, सिंगीवाला, टेढ़ा, ढोली

विश्व के यायावर

रोमा, जिप्सी, सिंती, सिगान, मानुष, गिटानो आदि।

अन्य यायावर

धर्म प्रचारक, ज्योतिषी (जोशी) प्रवासी साहित्यकार, यायावर साहित्यकार, यायावर नृवैज्ञानिक, यायावर भाषा वैज्ञानिक आदि।''[3] 'यायावरी साहित्य' की परम्परा कहाँ से चली, कब चली, यह बता पाना तो सचमुच टेढ़ी खीर ही है, लेकिन जयतु जयतु घुमक्कड पंथा को अपने जीवन का मूलमंत्र बना लेने वाले राहुल सांकृत्यायन ने 'यायावरी' को बहुत ही सरल बनाकर नाम दिया था 'घुमक्कड़ी' और इसी को संसार का सबसे बड़ा धर्म मान कर राहुल जी ने अपने ग्रन्थ घुमक्कड़ शास्त्र में लिखा है – ''.....यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा वही ले सकता है, जिसमें बहुत मात्रा में हर तरह का साहस है – तो उसे किसी की बात नहीं सुननी चाहिए। न माता के आँसू बहाने की परवाह करनी चाहिए, न पिता के भय और उदास होने, न भूल से विवाह में लाई अपनी पत्नी के रोने–धाने की फिक्र करनी चाहिए''।[4] और सचमुच, 'यायावरी साहित्य परम्परा' के पितामह माने जाने वाले राहुल सांकृत्यायन ने 9 अप्रैल 1983 में जन्म लेने के बाद मात्र दस वर्ष की आयु में ही 'घुमक्कड़ी' शुरू कर दी थी। डॉ० प्रभाकर माचवे ने अपनी पुस्तक राहुल सांकृत्यायन में लिखा है – ''राहुल जी यात्रा क्यों करते थे? संक्षेप में उनकी यात्राओं के निम्न उद्देश्य बताए जा सकते हैं–नए स्थान देखने की जिज्ञासा, उस स्थान या प्रदेश का पुरातत्व, इतिहास भूगोल, प्रमुख नगर, वहाँ रहने वालों का सामाजिक संगठन, मत–विश्वास, भाषा–साहित्य, संस्कृति, कला को जानना, प्राकृतिक सुन्दर स्थानों का परिचय प्राप्त करना।''।[5] राहुल जी की 'यायावर–साहित्य–सृष्टि' इतनी समृद्ध और बहुआयामी रही है कि सहज ही उनके जीवन पर आश्चर्य और गर्व होता है। शताधिक ग्रन्थों के प्रणेता राहुल जी ने अपने जीवन के चालीस वर्षों तक 'यायावरी' की है, जिसका सुखद सुपरिणाम हिन्दी जगत को उनकी बीस अमूल्य यायावरी कृत्तियों के रूप में मिला है।''[6] यायावर साहित्य की परम्परा के स्वर्णिम और समृद्ध कल के रूप में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन को अत्यन्त गर्व के साथ 'भारत का सांस्कृतिक राजदूत' कहना चाहूँगा, 'बहुआयामी व्यक्तित्व' के बेजोड़ रचनाकार और बहुभाषाविद् महापण्डित राहुल ने 'घुमक्कड़ शास्त्र' में जो लिखा, वही वस्तुतः यायावरी की सच्ची परिभाषा है :– ''घुमक्कड़ी सदा मिर्च की तरह काफी कड़वी और स्वादिष्ट रहेगी, तभी वह तरूण हृदयों को आकृष्ट कर सकेगी।''[7] 'यायावरी' को धर्मों का भी धर्म कहा जा सकता है। जिसके लिए किसी पूजा अर्चना की यद्धति नहीं चाहिए। अपितु मन में घूमने की इच्छा होनी चाहिए। यदि मन में ऐसी इच्छा उत्पन्न हो जाए तो उसे 'यायावरी' धर्म का आदेश समझ कर यायावर बनकर नवीन की खोज में निकल पड़ना चाहिए। यायावर की कोई जाति या सम्प्रदाय नहीं होता। ''व्यक्ति के लिए घुमक्कड़ी से बढ़कर कोई नकद धर्म नहीं है। जाति का भविष्य घुमक्कड़ों पर निर्भर करता है, इसलिए मैं कहूँगा कि हरेक तरूण और तरूणी को घुमक्कड़ व्रत ग्रहण करना चाहिए। इसके विरूद्ध दिये जाने वाले सारे प्रमाणों को झूठ और व्यर्थ का समझना चाहिए।''[8] यदि कोई भी व्यक्ति यायावरी जीवन को समझना चाहे तो पहले उसे स्वयं 'यायावर' बनना होगा। उसे यायावर धर्म की शिक्षा–दीक्षा लेनी होगी। तभी यह यायावरों के जीवन को समझ पाऐगा। 'यायावरी' कल्पना से परे है। बल्कि यह वास्तिवकता का वह मर्म है जिसे बिना जिए नहीं जाना जा सकता। ''बंजारा' शब्द में आनंद का भाव छिपा है। ऐसा लगता है जैसे कोई बंजारा अपनी धुन में गाता–बजाता मस्ती के साथ आगे बढ़ रहा है, एक अनिश्चित गंतव्य की ओर। शायद उसे कल की चिंता नहीं है। वह बस खुश है अपने में, अपने सहयात्री काफिले में। ''[9] घुमक्कड़ों, यायावरों, की यह घूमती दुनिया हर व्यक्ति को देखने में अच्छी लगती है। सड़क के किनारे तुम्बुओं में रहते या फिर दुर्गम पहाड़ों पर यहाँ वहाँ घूमते ये लोग और इनका जीवन दर्शन देखने में लुभावना लगता है। किन्तु यदि इनके जीवन दर्शन को जानना है तो स्वयं घुमक्कड़ी बनना पड़ेगा। ''कौन–सा तरुण है जिसे आँख खुलने के समय से दुनिया घूमने की इच्छा न हुई हो। मैं समझता हूँ जिनकी नसों में गरम खून है, उनमें कम ही ऐसे होंगे जिन्होंने किसी समय घर की चहार दीवारी तोड़कर बाहर निकलने की इच्छा नहीं की हो। उनके रास्ते में बाधाएँ जरूर हैं। बाहरी दुनिया से अधिक बाधाएँ आदमी के दिल में होती हैं।''[10] यदि लोग यात्राएँ न करते तो शायद दुनिया की खोज ही न हो पाती। समुद्र से बर्फ तक मनुष्य अज्ञानता के जीवन को जी रहा होता। यदि वर्षों पहले की बात करें तो मनुष्य का ज्ञान शून्य था। उसे कुछ भी मालूम नहीं था। किन्तु उसकी यायावरी और जिज्ञासू प्रवृत्ति ने दुनिया को एक गॉव बना दिया है। ''आज से केवल 500 वर्ष पहले तक दुनिया के विषय में लोगों का ज्ञान अत्यंत संकुचित था। अधिकतर लोग सोचा करते थे कि धरती सपाट है और यदि हम एक ही दिशा में दूर तक चलते जाएँ तो इसके अन्तिम छोर तक पहुँच जाएंगे और इससे अधिक आगे बढ़ने पर नीचे जा गिरेंगे। धरती के अज्ञात हिस्सों के विषय में भी उन दिनों तरह–तरह की अजीबो–गरीब कहानियॉ प्रचलित थीं।''[11] यदि मन में यायावरों के विषय में जानने की इच्छा तीव्र होने लगती है तो स्वयं यायावर बनने के लिए अपने हृदय की दुर्बलता को छोड़कर दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती है। ''तुम अपने हृदय की दुर्बलता को छोड़ो, फिर दुनिया की विजय कर सकते हो, उसके किसी भी भाग में जा सकते हो, बिना पैसा–कौड़ी के जा सकते हैं, केवल साहस की आवश्यकता है, बाहर निकलने की आवश्यकता है और वीर की तरह मृत्यु पर हँसने की आवश्यकता है।''[12] कुछ लोगों का मानना है कि धर्म और आधुनिक घुमक्कड़ी में विरोध है। लेकिन यह तथ्य /बात वास्तविकता से परे लगती है। धर्म का प्रचार प्रसार करने वाले अधिकतर घुमक्कड़ हुए हैं। जिन्होंने यायावरों की तरह घूम–घूम कर अपने धर्म का प्रचार प्रसार किया है। ''लेकिन धर्म से घुमक्कड़ी का विरोध कैसे हो सकता है, जबकि हम जानते हैं कि प्रथम श्रेणी के

घुमक्कड़ ही कितने ही धर्मों के संस्थापक हुए और कितनों ने धर्म से सम्बन्धित हो अद्‌भुत साहस का परिचय देते दुनिया के दूर–दूर के देशों की खाक छानी।''[13] धर्म प्रचार के लिए धर्माचार्यों ने यायावरी जीवन का यापन किया। यायावरी बनने के लिए भय का त्याग करना पड़ता है। मृत्यु का भय यायावरी बनने नहीं देता। उसे घर से बाहर निकलने नहीं देता। ''घुमक्कड़ मृत्यु से नहीं डरता। घुमक्कड़ सुकृत करना चाहता है, लेकिन किसी लोभ के नशे में पड़कर नहीं। उसने यहाँ जन्म लिया है, उसका स्वभाव मजबूर करता है कि अपने आसपास को शक्ति–भर स्वच्छ और प्रसन्न रखें। वह केवल कर्त्तव्य और आत्म तुष्टि के लिए महान् से महान् उत्सर्ग करने के लिए तैयार होता है। बस, यही होना चाहिए – घुमक्कड़ परिवार का महान् उद्‌देश्य।''[14] प्रत्येक यायावर साहित्यकार यायावरी 'यायावरों' की खोज में करता है। उसका उद्‌देश्य यायावरों के जीवन शैली को पढ़ना, समझना और महसूस करना होता है ''.. ऐसा कोई सम्भांत घुमक्कड़ नहीं होगा जो कि दूसरों को दुःख और पीड़ा देने वाला काम करेगा। ''[15] उद्‌देश्य विहीन घुमक्कड़ किसी उद्‌देश्य को न रखकर भी घुमक्कड़ पथ पर लोगों में सम्मान और विश्वास पैदा कर सकता है। घुमक्कड़ो में घनिष्ठ भ्रातृभाव पैदा कर सकता है। उसका मधुर एवं अच्छा आचरण इस कार्य में उसकी सहायता करता है।''निरूद्‌देश्य घुमक्कड़ होने का बहुतों को मौका मिलता है। घुमक्कड़ शास्त्र अभी तक लिखा नहीं गया था, इसलिए घुमक्कड़ी का क्या उद्‌देश्य है, यह कैसे लोगों को पता लगता? अभी तक लोग घुमक्कड़ को साधन मानते थे और साध्य मानते थे मुक्ति–देव दर्शन को, लेकिन घुमक्कड़ी केवल साधन नहीं, वह साथ ही साध्य भी है।''[16] यायावरी करने वाले साहित्यकार के विषय में कहा जाता कि उसे असंग और निर्लेप रहना चाहिए। स्नेह रखना उसकी प्रवृत्ति होती है। उसकी यह प्रवृत्ति उसके अन्तःमल में अनेक स्मृतियाँ एकत्र कर लेती हैं। राग एवं द्वेष की भावना से वह बहुत ऊपर उठ जाता है। ''तुलसी राम की तलाश में 'काम' विमुख हो चुके थे। वे अनिकेतन भी हैं और अपरिग्रही भी। वे जानते हैं कि काम बाँधता है। घर बाँधता है, परिवार बाँधता है, मोह के ये सूक्ष्म बंधन और अदृश्य बाधएँ यायावरी में बाधक हैं।''[17] रामचरित मानस में भी इसके मुख्य पात्र राम को यायावरों की तरह जंगल–जंगल भटकते दिखाया गया है। डा० राम समेही लाल शर्मा 'यायावर' अपने एक लेख 'रामचरित मानस में यायावरी तत्त्व' में लिखते हैं :– ''मानस का किष्किंधा कांड कर्म कांड है। यहाँ से राम की कर्म–संकुतला प्रारम्भ होती है और यह कर्म–संकुतला यायावरी से आवृत्त है। यह अनायास नहीं है कि तुलसी इसका प्रारम्भ सीता की खोज में भटकते और उसके व्यापक विहितार्थ खोजते यायावर राम और लक्षमण की वंदना से करते हैं।''[18] मानस में यायावरी यत्र–तत्र सर्वत्र दृष्टि गोचर होती है। भगवान शिव को भी यहाँ यायावर रूप में दिखाया गया है। उनकी अर्धांग्नि पार्वती को भी उनके साथ यायावर रूप में विचरण करते दिखाया गया है। ''रामचरित मानस में यायावरी का दूसरा प्रतिमान भगवान शिव हैं। शिव देवाधिदेव हैं, महादेव हैं, रूद्र हैं, सृष्टि के संहार का भार उन्हीं पर है। वे अनिकेतन, दिगम्बर, अपरिग्रही, त्रिनेत्रधारी और भूतनाथ हैं। ''[19] रामचरित मानस में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र को भी यायावरों की तरह जंगलों में भटकते दिखाया गया है। ''राम का सम्पूर्ण वनवास यायावरी करते हुए बीतता है।''[20] पूर्णकालिक यायावर बनने के लिए चौदह वर्ष की आयु में घर छोड़ देना चाहिए। आँसू बहा रही माँ के आंसुओं की परवाह नहीं करनी चाहिए। डॉ० श्याम सिंह शशि के शब्दों में– ''हम यदि उनके कथन को 'आप्तवचन' मान लें तो फिर ईसामसीह तथा हजरत मोहम्मद से लेकर भगवान बुद्‌ध, महावीर, गुरूनानक जैसे धर्मसंस्थापक तथा आदि यायावर धर्म पुरूष मिल जाएंगे जिन्होंने घर बार त्यागकर आध्यात्मिक यायावरी में अपना जीवन समर्पित कर दिया।''[21] यायावर शब्द के अर्थ स्पष्ट करते हुए डॉ० मधुसूदन साहा का अपना ही मन्तव्य है। उनका मानना है कि यायावर शब्द घुमक्कड़ी होने को प्रदर्शित करता है :– ''वस्तुतः यायावर का अर्थ घुमक्कड़ है। ये दो प्रकार के होते हैं। एक वो जो अकेले अथवा झुंड में परिभ्रमण के लिए जाते हैं और विभिन्न दर्शनीय स्थानों को देखकर तथा सप्ताह – दो सप्ताह वहाँ के जनजीवन का जायजा लेकर पुनः अपने ठिकाने पर वापस आ जाते हैं और दूसरे प्रकार के घुमक्कड़ वे होते हैं जिनका अपना स्थायी घर–द्‌वार नहीं होता इसलिए जीवनभर यायावरी जिन्दगी ही जीते रहते हैं। बंजारा जनजाति इसी श्रेणी में आती है।''[22] यायावर साहित्य को मलयालम भाषा में अक्सर 'संचार साहित्य' के नाम से जाना जाता है। वस्तुतः मलयालम भाषा में संचार शब्द का अर्थ यात्रा या पर्यटन है। डॉ० के० श्रीलता विष्णु यायावर साहित्य के विषय में अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते हैं कि – '' यात्रा किए गए स्थलों, होटलों या भवनों एवं देखे गए पदार्थों के विवरण मात्र से केवल यात्रा रिपोर्ट ही बनती है। यह विवरण तभी यात्रा वर्णन होता है जब लेखक के व्यक्तिगत अनुभव और उनसे तात्कालिक प्रतिक्रिया भी प्रतिपादित होती है।[23] यात्रा–वृत्तातं और यायावरी–साहित्य को प्रायः एक मान लिया है, जबकि बहुत हद ये दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक हैं परन्तु इन्हें अक्षरशः एक दूसरे के पर्याय नहीं कहा जा सकता।''यात्रा जब यायावर करता है तो वह यायावरी बन जाती है, अन्यथा वह यात्रा–वृत्तांत, यात्रावृत्त–संस्मरण तक सीमित रहती है। हिन्दी साहित्य के आलोचकों में ही नहीं, प्रत्युत भारतीय भाषाओं के अनेक विद्वानों में यह भ्रान्ति आज भी व्याप्त हैं सम्भवतः उन्होंने बंजारे, गाड़िया, लुहारों, गद्‌दियों व रोमा समुदायों के यायावरी साहित्य पर कभी गम्भीर रूप से चितंन नहीं किया। इन यायावरों की यात्राएँ विशिष्ट शैली में शताब्दियों से सुबकते दस्तावेज हैं जिन्हें उनका सहचर बनकर पढ़ा जा सकता है।''[24] यायावर साहित्यकार वह साहित्यकार है जो अपने घर–बार को छोड़कर यायावरों की खोज में यहॉ से वहॉ यायावरों की तरह भटकता है, उनके बीच जाकर रहता है, उनके रहन–सहन, संस्कृति, सभ्यता सुख–दुख का अनुभव करता है। घर में बैठ कर यायावरों पर लिखना काल्पनिक साहित्य तो हो सकता है परन्तु यायावरी साहित्य नहीं। 'यायावरी' का यायावर प्रकृति के निकट यात्रा करता हुआ आगे बढ़ता है।

''प्रकृति उसे मोहती है। वह उसमें रम जाता है किन्तु देश की धरती उसे पुकारती रहती है। वह अपनी धरती का मोह कहीं भी छोड़ नहीं पाता। वह यायावरी में जीवन–यात्रा की यथार्थ समस्याओं को जूझता है।''[25]

यायावर साहित्य पर विश्लेषण करने से पूर्व उसके अर्थ को समझ लेना अति आवश्यक है। उसे निर्माण की संरचना को जानना जरूरी है। चाहे निर्माण जिस प्रकार का भी हो, उसके लिए आधार की जरूरत होती है। आधार के बिना निर्माण की कल्पना स्वप्न मात्र है। साधारणतः साहित्य में अवलंब अथवा आश्रय को ही आधार कहते हैं उसके मूल में कई तत्व छिपे होते हैं। ये विविध तत्व अपना पृथक अस्तित्व खोकर एकरूप हो जाते हैं, तब निर्माण के उतरने की भूमिका तैयार होती है। यायावर साहित्य के निर्माण के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। अब प्रश्न उठता है कि यायावर शब्द की उत्पत्ति कहॉ से हुई, इसका शाब्दिक अर्थ क्या है? ''कोशकारों के अनुसार यायावर, परिभ्रमणकर्ता, चलवासी, बंजारा, खानाबदोश तथा अंग्रेजी के (Nomad और Traveller) शब्द पर्यायवाची माने गए हैं। यायावर साहित्य का अध्ययन नृतत्व शास्त्र, समाज–विज्ञान तथा यायावर शास्त्र के बिना अधूरा है जिसे हिन्दी में साहित्य के इतिहासकारों ने जानने की जरूरत नहीं समझी। यही कारण है कि हिन्दी में इस विधा पर राहुल सांकृत्यायन के 'घुमक्कड़ शास्त्र' के अतिरिक्त ऐसा कोई अन्य मानकग्रन्थ उपलब्ध नहीं है।संस्कृत में 'यात्रा' शब्द तो है पर 'यायावर' पर कोई विशेष सामग्री नहीं मिलती। 'यात्रा' शब्द की व्युत्यति 'या+ष्ट्रन' शब्द से हुई है जो स्त्रीलिंग है। हिन्दी में गणेश दत्त शास्त्री, द्वारिका प्रसाद मिश्र तथा सुरेन्द्र माथुर ने साहित्य पर न्यूनाधिक आलोचनात्मक साहित्य तो लिखा किन्तु यायावर साहित्य अथवा यायावर शास्त्र पर उसका ध्यान नहीं गया। ''[26] यायावरी होने का अभिप्राय है मस्त मौला होकर एक जगह से दूसरी जगह यायावरों की खोज करना उन पर लिखना। वैसे देखा जाए तो यायावरों की दुनिया और लोगों से बिल्कुल अलग होती है। वे अपनी ही धुन में मस्त रहते हैं। यायावरी की मादकता उन्हें मदमस्त कर देती है।''यायावरों की दुनिया बड़ी निराली होती है। यायावर स्वतन्त्र जीना चाहता है। दखलन्दाजी उसे कतई पसन्द नहीं। यायावर स्वभाव से भी होता है और पेशे से भी। पगडंडी से उसका अटूट रिश्ता है। गिरि–गहरों में यायावरी पीढ़िया जन्मती हैं।''[27] एक दुःख–दर्द भरे जीवन जीने वाले लोगों के बीच रहकर, जो साहित्यकार इनको अनुभव करता है एवं अपनी लेखनी के माध्यम से पाठकों के सामने लता है; यायावर साहित्यकार कहलाता है। यायावरी मरू मरीचिका की तरह है जिसकी खोज में यायावर साहित्यकार अनरवत भटकता रहता है।

''एक अवरत खोज हिमालय की कन्दराओं में
कश्मीर से मणिपुर तक खोजाजंगलों से रेगिस्तानों तक
मृगतृष्णा थी यायावरी।[28]

वास्तव में एक यायावर साहित्यकार के लिए यायावरी एक अनन्त खोज है। यायावरों की खोज में हिमालय की कन्दराओं में भटकता है। कश्मीर से मणिपुर तक, जंगलों से रेगिस्तान तक यायावरों के पीछे भटकता रहता है। इस देश से उस देश तक, पगडंडी से राजपथ तक जहॉ भी वह चला जाए उसके मन में यायावरों के प्रति छटपटाहट रहती है। क्योंकि यायावरी साहित्यकार के तन मन में यायावर समा जाता है। यायावरी एक नशे की भांति है। जो यायावरी साहित्यकार के जीवन का हिस्सा बन जाता है। ''जिज्ञासा मनुष्य की मूल प्रवृत्ति है। जब उसके अन्दर सोचने–समझने की शक्ति उद्भूत हुई, तभी से उसे आस–पास की नई–नई चीजों को देखने–परखने की ललक होने लगी और जैसे–जैसे उसकी सौन्दर्य–चेतना बलवती होती गई, उसके अन्दर नए प्राकृतिक स्थलों, झील–झरनों, नदी–नालों, पर्वत–पहाड़ो, वन–प्रांतरों आदि को देखने की इच्छा सुगबुगाने लगी। इस प्रकार अनजाने ही मानव मन के किसी कोने में यायावरी प्रवृत्ति रूप ग्रहण करने लगी ''[29] प्रत्येक मनुष्य के जीवन का सिद्धान्त अलग होता। उसके जीने की शैली में परिवर्तन करना इतना आसान कार्य नहीं होता। उसकी सभ्यता, संस्कृति, परम्परा कहीं न कहीं उसका आइना अवश्य बनती है। इसलिए घुमक्कड़ शास्त्र कहता है– ''मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ी से बढ़कर व्यक्ति और समाज का कोई हितकारी नहीं हो सकता' घुमक्कड़ व्यक्ति जितने व्यापक स्वरूप में यात्रा करेगा उतना ही उसका अनुभव कोष समृद्ध होगा।''[30] यायावरी के विषय में डॉ0 के श्री लता विष्णु अपना मत प्रकट करते हुए लिखती हैः–''यायावर अपने वर्ण्य व्यक्ति की शिक्षा–दीक्षा, स्वास्थ्य रक्षा आदि विशेषताओं के साथ वहॉ के लोगों के अतीत इतिहास का भी यथा सम्भव अनुशीलन करे। वह यह भी निरख ले कि वहॉ की जनता अपना नया इतिहास कैसे रच रही है।''[31] इस विषय पर डॉ० तुकाराम पाटील अपने मत प्रकट करते हुए लिखते हैः– ''जीवन एक यायावरी हैं यह मानव जन्म के साथ आरम्भ होती है और मृत्यु में विलय पाती है।''[32] विचारों की खोज में बुद्धिजीवी साहित्यकार एक जगह से दूसरी जगह नवीनता के लिए यायावरों जैसा जीवन व्यतीत करता है। यायावरी को बुद्धि की खुजली भी कहा जा सकता है। डॉ० दिनेश चमोला शैलेश यायावर साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखते हैं–''हरित प्रकृति का सानिध्य या तो अध्यात्मिक व दर्शन को अपनी साधना में आत्मसात कर लेने वाले ब्रह्मर्षियों को सुलभ था, जिन्होंने प्रकृति की गोद में समाधिस्थ होकर न केवल वेद पुराणों व अनेकानेक धार्मिक ग्रन्थों की रचना कर अपना जीवन सफल बनाया बल्कि गहन चिंतन सृजन व साधना में आंकठ डूब अपनी तपस्या के रक्षामृत से भटकती मानवता का दिशाबोध कर उसे गहन ज्ञान से जीवन की एक नई भावधारा भी प्रदान की या फिर प्रकृति की इन रमणीय उपत्यकाओं में प्रकृतिवत् जीवन जीने वाले धुमन्तु खानावदोश (यायावर) पशुचरों को,जिनके जीवन की प्रत्येक धड़कन प्रकृति की विराटता से अधिशासित होती है। ''[33] यायावर साहित्यकार का कोई धर्म नहीं होता, न ही होना चाहिए। यायावर का अर्थ है घुमक्कड़। यायावरी साहित्यकार होने के लिए धन की आवश्यकता नहीं अपितु अद्म्य साहस की आवश्यकता है घुमक्कड़ धर्म के विषय में राहुल सांकृत्यायन अपने विचार प्रकट करते हुए लिखते हैंः–''घुमक्कड़ धर्म किसी जात–पात को नहीं मानता, न

किसी धर्म या वर्ण के आधार पर अवास्थित वर्ग ही को। यह सबसे आवश्यक है कि एक घुमक्कड़ दूसरे को देखकर बिल्कुल आत्मीयता का अनुभव करने लगे। ''[34] यायावर साहित्यकार बनने के लिए, यायावरी होना आवश्यक है। उसे घर की चार दीवारी को तोड़कर बाहर आने की आवश्यकता है। घुमक्कड़ वही हो सकता है जिसमें घूमने–फिरने यायावर होने का जजवा हो। राहुल सांकृत्यायन के शब्दों मेंः–''हाँ, तो घुमक्कड़ के लिए जंजाल तोड़कर बाहर आना पहली आवश्यकता है। कौन–सा तरूण है जिसे ऑख खुलने के समय से ही धूमने की इच्छा न हुई है यायावर तथा यात्रा साहित्य में अन्तर को समझने से पूर्व दोनों शब्दों की व्याख्या को समझना आवश्यक है। कोशकारों के अनुसार 'यायावर' परिभ्रमणकर्ता, चलवासी, बंजरा, खानावदोश तथा अंग्रेजी के Nomad और Traveller शब्द पर्यायवाची माने गए हैं। यायावर साहित्य का अध्ययन नृतत्वशास्त्र, समाज–विज्ञान तथा यायावर शास्त्र के बिना अधूरा है जिसे हिन्दी में साहित्य के इतिहासकारों ने जानने की जरूरत नहीं समझी। यही कारण है कि हिन्दी में इस विधा पर राहुल सांकृत्यायन के घुमक्कड़ शास्त्र के अतिरिक्त ऐसा कोई अन्य मानक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है। राहुल सांकृत्यायन के शब्दों मेंः–''अथातो घुमक्कड़–जिज्ञासा–संस्कृत से ग्रन्थ को शुरु करने के लिए पाठकों को रोष नहीं होना चाहिए। आखिर हम शास्त्र लिखने जा रहे हैं फिर शास्त्र की परिपाटी को तो मानना ही पड़ेगा। शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होना बतलाई गई जो कि श्रेष्ठ तथा व्यक्ति और समाज के लिए परम हितकारी हो। ''[36] मध्यकाल के लोगों की दृष्टि में दुनिया बहुत छोटी थी क्योंकि इनकी विशालता के विषय में उन्हें अधिक ज्ञान नहीं था। साथ–साथ उस समय लोगों को अपनी वह दुनिया बहुत विस्तृत लगती थी। ''विकोलो पोलों और मेटिला पोलो भी'' इटली के दो प्रसिद्ध व्यापारी थे। वे वेनिस में रहते थे। इन्होंने सन् 1260 में एक विचित्र यात्रा की। वे रूस तक पहुँच गये और जब वे अपनी यात्रा पर कैसपियन सागर से होते हुए वापस आ रहे थे तो उन्हें चीन के बादशाह कुबलाई खान के दरबार के कुछ व्यक्ति मिले। ये लोग इन दोनों भाइयों को अपने साथ पेंकिग ले गए। कहा जाता है कि चीन में इन लोगों का भव्य स्वागत हुआ। ये दोनों पहले यूरोपियन थे, जिन्हें कुबलाई खान ने देखा और यही पहले व्यक्ति थे। जिन्होंने चीन की सीमा में सर्वप्रथम प्रवेश किया। कुछ वर्ष वहॉ रहने के बाद ये दोनों यात्री सन् 1269 में इटली वापस लौट गये।''[37] इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की प्रवृति प्रारम्भ काल से ही यायावरी रही है। यात्रा करने की इच्छा सदैव उसके मन में उठती रही है यात्राओं के कारण ही मनुष्य का विकास हुआ है और हो रहा है। यदि यात्राओं का वर्णन किया जाए तो कोलम्बस और वास्को–डी–गामा दो घुमक्कड़ ऐसे थे जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला। आज का सर्वसम्पन्न देश अमेरिका कभी निर्जन सा पड़ा था। राहुल सांकृत्यायन के शब्दों में ''एशिया के कूप–मंडूको को घुमक्कड़ धर्म की महिमा भूल गई, इसलिए उन्होंने अमेरिका पर अपनी झंठी नहीं गाडी। दो शताब्दियों पहले तक आस्ट्रेलिया खाली पड़ा था। चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है, लेकिन इसको इतनी अकल नहीं आई कि जाकर वहॉ अपना झंडा गाड़ आते।''[38] यात्रा करने के लिए साहस की आवश्यकता होती है। साहस दृढ़ निश्चय से पैदा होता है। विश्व में अनेक ऐसा यात्री रहे हैं जिन्होंने अपने जीवन को दाव पर लगाकर यात्राऍ की। विश्व की खोज–यात्राओं के संदर्भ में क्रिस्टोफर कोलंबस का नाम आज भी बड़े सम्मान से लिया जाता है।''वह एक ऐसा साहसी नाविक था, जिसके मन में भारत पहुँचने का स्वप्न भीतर ही भीतर पल रहा था। वह इटली के बंदरगाह जिनोआ से भारत की खोज करने निकला था। जब यात्रा करते करते अंततः उसका दल भूमि के पास पहुँचा तो उसे लगा कि वह इंडिया पहुँच गया, लेकिन वस्तुतः वह उत्तरी अमरीका में बहामा द्वीप समूह पर पहुँचा था। इन टापुओं को आज भी वेस्ट इंडीज कहा जाता है और वहॉ के निवासियों को वेस्ट इंडियन''[39] इस तथ्य से ज्ञात होता है कि कोलंबस, वास्को डी गामा, मार्कोपोलो, तेनजिंग, पिअरे, आर्मस्ट्राम आदि अनेक खोजी यात्रियों ने यायावर बन कर, घूम–घूम कर नई खोजों को अंजाम दिया है। डॉ० के.श्रीलता विष्णु यायावर साहित्य के विषय में लिखते हैं कि– ''वास्तव में यात्रा साहित्य के समान अन्य कोई भी साहित्यिक विधा नहीं है जिसमें सारी वैज्ञानिक उपलब्धियों से सम्बन्धित खबरों, जानकारियों एवं अभिज्ञाताओं को प्रसंगानुकुल लगाकर चित्रण को विशेष उपयोगी बनाया जा सकता है।''[40] यायावर साहित्य पर यदि प्रकाश डाला जाए तो यह कहा जा सकता है कि यायावर जातियों पर अध्ययन बहुत कम हुआ है। उनके उत्थान के बारे में किसी ने कोई प्रयास नहीं किया। यायावर साहित्य को हिन्दी साहित्य में स्थापित करने की आवश्यकता है। किस को यायावर साहित्य का आदर्श माना जाए यह भी एक विचारणीय प्रश्न है। इस विषय पर एक इंटरव्यू में डॉ० श्याम सिंह शशि लिखते हैं।''मैं राहुल सांकृत्यायन, भिक्कु चमन लाल तथा सत्यदेव परिव्राजक को अपना आदर्श यायावर लेखक मानता हूँ जिन्होंने देश–विदेश की यात्राओं पर ढ़ेर सारा साहित्य दिया है तथा न्यूनाधिक यायावर समुदायों पर भी लिखा है। यात्रा–वृत्तांत और यायावरी साहित्य को प्रायः एक मान लिया जाता है। यद्यपि कुछ सीमा तक ये दोनों शब्द एक दूसरे के पूरक तो हैं, किन्तु अक्षरशः पर्याय नहीं। यात्रा जब यायावर करता है तो वह यायावरी बन जाती है अन्यथा वह यात्रा वृत्तांत यात्रावृत अथवा यात्रा संस्मरण तक सीमित रहती है हिन्दी साहित्य के आलोचकों में ही नहीं, प्रत्युत भारतीय भाषाओं के अनेक विद्वानों में यह भ्रांति आज भी व्याप्त है। सम्भवतः उन्होंने बंजारों, गाड़िया लुहारों, गद्दियों व रोमा समुदायों के यायावरी साहित्य पर कभी गम्भीर रूप से चिंतन नहीं किया। इन यायावरों की यात्राऍ विशिष्ट शैली में शताब्दियों के सुबकते दस्तावेज हैं जिन्हें सहचर बनकर पढ़ा जा सकता है।[41] यायावर तथा यात्रा साहित्य को भाषा पत्रिका के सम्पादक डॉ० शशि भारद्वाज ने भ्रमणशील प्रवृति की तीव्र उत्कटता को यायावर साहित्यकार का जन्मदाता माना है। ''यात्रा साहित्य और यायावर साहित्य का मूल उत्स एक होने के बावजूद दोनों के मध्य एक सूक्ष्म विभाजक रेखा है। लेखक जहॉ अपनी

विविध भ्रमण यात्राओं के दौरान अपनी आखिन देखी' को लेखनीबद्ध करता है तो वह यात्रा साहित्य बन जाता है और यात्रा के परिप्रेक्ष्य में ही जब लेखक विविध यायावर जातियों के मध्य रहकर उन अपरिचित अनजान खानावदोश जातियों के मध्य रहकर उन अपरिचित अनजान खानाबदोश जातियों के रहन–सहन, भाषा बोली, रीतिरिवाज और संस्कृति से अपनी लेखनी द्वारा समाज को परिचित कराता है। तो वह यायावर साहित्य की श्रेणी में आता है।''[42] मन से ही नहीं अपितु तन से भी। प्रकृति और इसके बीच रहने वालों की खोज प्रकृति वैज्ञानिक चार्ल्स डार्विन से लेकर जीवित साहित्यकार डॉ० श्याम सिंह शशि तक करते आए हैं। विज्ञान और यायावर साहित्य दोनों कैसे मनुष्य को यायावर बना देते हैं एक उदाहरण प्रस्तुत हैं– ''21 दिसम्बर, 1831 को प्लाईमाऊथ से पीगल नामक जलयान संसार की वैज्ञानिक खोज यात्रा पर रवाना हुआ। इसमें प्रकृति वैज्ञानिक के रूप में चार्ल्स डार्विन थे। इस यात्रा के दौरान डार्विन ने जीव–जन्तुओं के विषय में जमकर अध्ययन किया। उन्होंने अनेक विलुप्त जीवों के अवशेष एकत्र किए तथा इन अवशेषों की जीवित प्राणियों से तुलना की 18 अक्तूबर, 1936 को जब वह यात्रा से इग्लैंड लौटे तो उनकी नोटबुक तथ्यों से भरी हुई थी तथा इस लम्बी यात्रा के दौरान इक्कठे किये गये नमूनों से कई बक्से भरे हुए थे। उनके मन में जीवन के रहस्यों को समझने के लिए अनेक विचार मंडरा रहे थे तथा मस्तिष्क में धीरे–धीरे यह बात उभर रही थी कि पृथ्वी पर अनेक रूपों में जो जीवन प्रस्फुटित हुआ है, वह सहज विकास का परिणाम है।''[43] यायावरी धरती के भीतर की यात्रा है जबकि यात्रा साहित्य भौतिक सुखों की यात्रा है, यायावरी शरीर की यात्रा है जीवन का जीवन से सीधा साक्षात्कार यायावरी है जबकि मन की यात्रा, यात्रासाहित्य है। 1100 लोग यात्री तो हो सकते हैं किन्तु इनमें से 11 ही लोग यायावरी हो सकते हैं। वास्तविक यायावरी चाहे वह साहित्यकार हो या अन्य वह होता है जो सांसारिक सुखों से दूर रहता है। वह कभी अपनी आत्मसलागा नहीं करता। उसे किसी से कुछ लेना देना नहीं। उसकी एक ही आंकाक्षा होती है। अनवरत एक नई खोज। जैसे धरती की पीड़ा मजदूर जानता है वैसे ही यायावरों की वेदना और दर्द को भी यायावर साहित्यकार ही जान सकता है। एक जीवन्त उदाहरण द्रष्टव्य है।''और तभी वह अपनी रिवालवर उठा लाया। वह गोली दागने ही वाला था कि इसी बीच उसकी पत्नी आ गई। उसने बीच बचाव किया और मेरी जान बच गई। उस दिन से बाद उन लोगों में मेरा अविश्वास बढ़ता गया। अगले दिन मेरी पत्नी चल बसी और मैं तथा मेरी बेटी एक कारवां के साथ आगे चल पड़े। यह दर्द है जिसे हम सदियों से छिपाए हैं।,,[44] ऋग्वेद– मं 91 सू. 36।। पृष्ठ सं– 228 में भी यायावरी होने का उपदेश दिया गया है।

''प्र वेपयन्ति पर्वतान्चि बिच्यान्ति वनस्पतीन्।
प्रो आरत मरूतो दुर्मदा इब देवासाः सर्वया विशा।।''[45]

यात्रा साहित्य के विषय में श्री धर्मवीर भारती अपनी पुस्तक 'यात्राचक्र' में अपने अनुभव को इस प्रकार व्यक्त करते हैंः–''यात्राओं के बारे में एक बात मैंने महसूस की है जो बड़ी अजीव है, लेकिन बहुत सच। मेरा ख्याल है कि दूसरे यात्रियों ने भी इसे जरूर महसूस किया होगा लेकिन अचरज है कि उन्होंने कहा क्योंकि नहीं? अक्सर ऐसा होता है कि इसके बहुत पहले कि हम सात समुद्र पार किसी अनदेखे देश में जाये, उसे देखे वह पहले से ही हमारी कल्पना में बसा हुआ होता है कुछ सुना, कुछ पढ़ा, कुछ अनुमान किया हुआ और जब हम सचमुच एक दिन वहॉ जाते हैं तो उसी का एक बिल्कुल निजी, अपना संस्करण साथ लेते हुए जाते हैं। भूगोल एक बाहर का, एक हमारे अन्दर का। यात्राएॅ दोनों साथ होती हैं।हम बाहर भी जाते हैं और साथ–साथ स्मृतियों और कल्पनाओं के देश में भी समानान्तर यात्रा करते चलते हैं।''[46] सच्चे मानो में साहित्यकार वही है जो महान साहित्य की रचना करे। साहित्य प्रभावशाली होकर सफलता को प्राप्त करता है, वास्तव में साहित्य प्रकाश का रूपान्तर है। प्रकाश आलोक को पैदा करता है। साहित्य का लक्ष्य मनुष्य जीवन के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करके मनुष्यता के वास्तविक लक्ष्य तक ले जाने का संकल्प है और मनुष्य के दुःखों को अनुभव करा सकने वाली दृष्टि कील प्रतिष्ठा और ऐसे दृढ़चेता आदर्श चरित्रों की सृष्टि करना है जो दीर्घकाल तक मनुष्यता को मार्ग दिखाता रहे। जो साहित्य ऐसा नहीं कर पाता उसमें कहीं न कहीं त्रुटि है। यह एक कटु सत्य है कि वैज्ञानिक विकास के कारण आज हम प्रकृति से निरन्तर दूर होते जा रहे हैं। किन्तु वास्तव में मानव और प्रकृति का चिर सम्बन्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी मानव यायावरी प्रवृति का रहा है इसी कारण मानव के हृदय में अन्दर एवं बाह्य दोनों यायावरी प्रवृति होती है। उसे प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में मुक्ति का आभास होता है। डॉ० श्याम सिंह शशि अनुभवों के अनेक आयामों से गुजरते हुए यायावरी की उस प्रकाष्टा पर पहुॅच गए हैं जिसे शब्दों में बताया जाना सम्भव नहीं। राहुल सांकृत्यायन के बाद वे ही एक मात्र ऐसे कवि हैं जिन्होंने यायावरों के बीच रहकर यायावरी साहित्य को सृजन की मनोभूमिक दी है। यायावरों को लोग हसरत भरी निगाहों से देखते हैं। उनकी फोटों खींचते हैं। किन्तु उनके दर्द को कोई महसूस नहीं करता।''इसी बिडंबना को सहता है बेचारा यायावर, जिसे कुछ लोग खानाबदोश, जंगली या असभ्य तक कह ड़ालते हैं। काश, किसी के पास हृदय हुआ होता तो कपोल–कल्पित मान्यताओं को पनपने का अवसर ही न मिलता।''[47] हिन्दी साहित्य में यायावर साहित्य का स्थान अति महत्वपूर्ण है। हिन्दी साहित्य में यायावर साहित्य के माध्यम से खानावदोश यायावरों की वास्तविक स्थिति को लोगों के सामने लाया जा सकता है। ''युवावस्था से आज तक वर्षों से यायावरों पर शोध करते अब ऐसा लगने लगा कि यायावरी स्वयं मेरे जीवन का अंग बनती जा रही है।''[48] हिन्दी साहित्य यायावर साहित्यकारों को सदैव स्मरण करता रहेगा। यायावर साहित्य हिन्दी साहित्य गगन की एक नई विधा कही जा सकती है। यायावर साहित्य वह साहित्य है जो कल्पना से परे है एवं यायावरों के जीवन का वास्तविक चित्रण है। ये घुमतुं जातियॉ चाहे उन्हें किसी भी नाम से पुकारा जाए यायावर बनकर देश–विदेश, जंगल, पहाड़ों में भटक रही हैं। यह कभी न खत्म होने वाला भटकाव उनकी विड़म्बना

बन गया है। यायावरी शब्द जितना सरल प्रतीत होता है 'यायावरी' उतनी ही मुश्किल होती है। 'यायावरी' करने के लिए घर–परिवार से दूर रहना पड़ता है। मन–मस्तिष्क को स्वच्छन्दता देनी पड़ती है। दर–दर की खाक छाननी पड़ती है। भावनाओं को बहनें के लिए छोड़ देना पड़ता है। यायावर का एक ही उदेद्श्य होता है वह है यायावरी! यायावर साहित्यकार जंगलों, पहाड़ों, कन्दराओं में यायावर जातियों को खोजता रहता है। मात्र यात्रा करना और उस यात्रा का विवरण लिख देना यात्रा साहित्य तो हो सकता है किन्तु यायावर साहित्य नहीं क्योंकि यायावर साहित्यकार केवल दुख और वेदना को दूर से नहीं देखता अपितु उसे स्वयं भोगता है और उस भोग की जो अनुभूति होती है, वह यायावरी कहलाती है। देश–विदेश की यात्राएँ कलमबद्ध कर लेना यायावर साहित्य नहीं है। यायावरों के बीच उनके दुख का एक–एक अनुभव जब यायावर साहित्यकार स्वयं अनुभव करता है। तो उससे जो टीस निकलती है वह यायावर साहित्य कहलाता है।यायावर सहित्यकार स्वयं करुणा और वेदना की प्रति मूर्ति होता है। यायावरों के दुख–दर्द उसकी आँखों से आसूँ बनकर निकलते हैं। एक–एक आसूँ शब्द बनता है। शब्द–शब्द मिलकर यायावरी साहित्य को जन्म देते हैं। यह बात अपने आप में सार्थक है कि हिन्दी साहित्य में यायावर साहित्य का जन्म बहुत देर बाद हुआ।प्रारम्भ राहुल सांकृत्याययन और वर्तमान डॉ. श्याम सिंह शशि इस श्रृंखला की कड़िया है। बीच में बहुत से लोग हैं। जो काम कर रहे हैं किन्तु और जिजीविषा की अवश्यकता है। बहुत कुछ ऐसा है जो छिपा है–यायवरों के विषय में ! जिसे खोजने की जरुरत है। हिन्दी साहित्य वह साहित्य है जो साहित्य की प्रत्येक विधा को अपने में समाकर उसे सम्मान से प्रतिष्ठित करता है। 'यायावर साहित्य' को भी हिन्दी साहित्य ने एक नई विधा के रुप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

निष्कर्ष

डॉ. श्याम सिंह शशि को महापंडित राहुल सांकृत्यायन के बाद यायावर साहित्य को प्रतिष्ठित करने का श्रेय जाता है। जब भी यायावर साहित्य के विषय में बात की जाऐगी तो महापंडित राहुल सांकृत्यायन और माँ भारती के वरद् पुत्र डॉ. श्याम सुन्दर शशि का नाम स्वयं ही स्मरण हो आएगा। यात्रा जीवन की आवश्यकता है। यायावरी परम साधना। साधना के बिना आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती और साधना करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। सभ्य समाज वह होता है जो दलितों, उपेक्षितों, कमजोर और शोषित लोगों को अपने साथ लेकर चले। दूसरे को दबाना या फिर उस पर अत्याचार करना पशुता हैं। समाज तभी सृदृढ़ हो सकता है जब प्रत्येक व्यक्ति को बराबर का दर्जा दिया जाए। साहित्यकार का यह धर्म होता है कि वह लोगों को सद्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे। बंजारों, गडरियों, लौहारों, गद्दियों और रोमा यायावरों पर एक विशाल साहित्य लिखे जाने की आवश्कता है ताकि वह उन्हें सामान्य धारा में लाकर एक विशिष्ट पहचान दिला सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिमालय के यायावर – डॉ० श्याम सिंह शशि पृ.सं. 2*
2. *हिमालय के यायावर – डॉ० श्याम सिंह शशि पृ.सं. 2*
3. *भारतीय भाषा विशेषांक– यायावर साहित्य शास्त्र– डॉ० श्याम सिंह शशि पृ.सं.15 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
4. *भारतीय भाषा विशेषांक, शास्त्र– यायावर साहित्य शास्त्र– डॉ० शशि भारद्वाज पृ.सं. 23 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
5. *भारतीय भाषा विशेषांक, शास्त्र–यायावर साहित्य शास्त्र– डॉ० शशि भारद्वाज पृ.सं. 24 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
6. *भारतीय भाषा विशेषांक, शास्त्र–यायावर साहित्य शास्त्र– डॉ० शशि भारद्वाज पृ.सं. वही केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
7. *भाषा भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज पृ. सं.26 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
8. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 11– 12 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद*
9. *भारत के यायावर – डॉ० श्याम सिंह शशि पृ.सं. 12*
10. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 13 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद*
11. *विश्व प्रसिद्ध दुस्साहसिक खोज–यात्राएँ राजीव गर्ग प्रकाशन पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली पृ. 9*
12. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 19 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
13. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 56 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
14. *घुमक्कड शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 78 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
15. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 84 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
16. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 88 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
17. *'भाषा भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
18. *'भाषा भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
19. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.46 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
20. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.49 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
21. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.50–51 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
22. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक–डॉ० शशि*

भारद्वाज,पृ. सं.63 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।

23. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक –डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.128–129 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
24. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.12 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
25. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
26. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.13 एवं 14 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
27. *हिमालय के यायावर – डॉ० श्याम सिंह शशि, पृ.सं. 2*
28. *हिमालय के यायावर – डॉ० श्याम सिंह शशि, पृ.सं. 2*
29. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.62 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार*
30. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.90 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
31. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.130 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
32. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.139 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
33. *यायावर संस्कृति और संवेदना के संवाहकः वन गुज्जर – डॉ० दिनेश चमोला शैलेश, भाषा मई जून 2006, पृ०सं०154*
34. *घुमक्कड़ शास्त्र–राहुल सांकृत्यायन, पृ०सं. 24, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
35. *घुमक्कड़ शास्त्र–राहुल सांकृत्यायन, पृ०सं. 12, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
36. *घुमक्कड़ शास्त्र–राहुल सांकृत्यायन, पृ०सं. 7, किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
37. *विश्व प्रसिद्ध दुस्साहसिक खोज–यात्राएँ राजीव गर्ग प्रकाशन पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली पृ.सं.*
38. *घुमक्कड़ शास्त्र– राहुल सांकृत्यायन पृ०सं. 8 किताब महल प्रकाशन इलाहाबाद।*
39. *विश्व प्रसिद्ध दुस्साहसिक खोज–यात्राएं राजीव गर्ग प्रकाशन पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली पृ.सं.26*
40. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ.सं.130, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
41. *'भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.195 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
42. *''भाषा' भारतीय यायावर साहित्य विशेषांक – डॉ० शशि भारद्वाज, पृ. सं.3 केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग भारत सरकार।*
43. *विश्व प्रसिद्ध दुस्साहसिक खोज–यात्राएँ राजीव गर्ग प्रकाशन पुस्तक महल, खारी बावली, दिल्ली पृ.सं.80*
44. *''देश–देश में रोमा बच्चे''–डॉ. श्याम सिंह शशि पृ.सं. 11*
45. *''प्र वेपयन्ति पर्वतान्वि बिच्आन्ति वनस्पतीन्।*
    प्रो आरत मरूतो दुर्मदा इव देवासाः सर्वया विशा।।''45
46. *''यात्रा चक्र' धर्मवीर भारती, पृ.सं. 13।*
47. *भारत के यायावर–डॉ० श्याम सिंह शशि, पृ.सं. 62*
48. *भारत के यायावर–डॉ० श्याम सिंह शशि, पृ.सं. 63*